मुद्रा-स्फीति के कारण
(Causes of Inflation)

मुद्रा-स्फीति के मुख्य कारण निम्नलिखित है :-

(1) प्राकृतिक कारण (Natural causes) :- कभी-कभी मुद्रा-स्फीति प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए यदि वर्तमान खानों से अधिक मात्रा में सोने चाँदी या अन्य धातु निकलने लगे अथवा धातु के नये खान प्रकाश में आ जाएँ तो धातु की मात्रा में वृद्धि होती है जिसके चलते धातु-मुद्रा का भी प्रसार होता है। यह मुद्रा-स्फीति का एक कारण हो सकता है। धातु-मुद्रा के प्रचलन काल में मुद्रा-स्फीति मुख्यतः इसी कारण से होती थी।

इसी प्रकार दैवी आपत्तियों जैसे - भूकम्प, बाढ़, सूखा, फसल की बर्बादी आदि के चलते देश में उत्पादन में कमी होती है और यदि मुद्रा की मात्रा पूर्ववत रहे तो मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है। इस प्रकार कुछ प्राकृतिक कारणों के चलते मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होती है। जनसंख्या में वृद्धि भी माँग एवं उत्पादन की मात्रा में असंतुलन लाकर मुद्रा-स्फीति का सृजन करती है।

(2) वित्तीय कारण (Fiscal Causes) :- सरकार की वित्तीय नीति (Fiscal Policy) भी कभी कभी मुद्रा स्फीति का कारण बन जाती है। विकास-सम्बन्धी व्ययों (Development Expenditures) अथवा युद्ध जनित व्ययों (War Expenditures) को पूरा करने के लिए सरकार को अपनी आय की अपेक्षा अधिक व्यय करना पड़ता है जिसे घाटे के बजट (Deficit Budget) की नीति कहते हैं। इसके लिए सरकार प्रायः अधिक मात्रा में कागजी मुद्रा छापकर अपने व्यय को पूरा करती है जिसे हीनार्थ प्रबंधन (Deficit Financing) कहते हैं। चूँकि अल्पकाल में उत्पादन में अधिक वृद्धि सम्भव नहीं होती अतः घाटे के बजट के फलस्वरूप बढ़ता हुआ सरकारी व्यय मुद्रा-स्फीति का कारण बन जाता है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी सरकार की कर नीति (Tax Policy) भी मुद्रा स्फीति का कारण बनती है। यदि सरकार वस्तुओं और सेवाओं पर नये कर लगाये अथवा पुराने करों की दरों में वृद्धि कर दे तो मूल्य बढ़ते हैं और मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है।

Scanned with CamScanner

(3) मौद्रिक कारण (Monetary Causes):- मौद्रिक कारणों से मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है। कभी-कभी सरकार अपने व्ययों को पूरा करने के लिए अधिक मात्रा में मुद्रा जारी कर देती है जिससे लोगों की मौद्रिक आय एवं माँग में वृद्धि होती है और मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है। इसी प्रकार देश में बैंक यदि साख-मुद्रा (Credit Money) का अत्यधिक प्रसार करें, उपभोग के लिए अधिक ऋण (More consumer's credit) दे तथा केन्द्रीय बैंक ब्याज की दर को कम करके अथवा अन्य मौद्रिक नीतियों के सहारे सस्ती मुद्रा नीति (Cheap money policy) अपनाये तो मुद्रा का प्रसार होता है जो मुद्रा स्फीति के कारण हो सकते हैं।

(4) आय एवं उत्पादन संबंधी कारण (Causes Relating to Income and Production):- लोगों की मौद्रिक आय में वृद्धि एवं उत्पादन में कमी मुद्रा-स्फीति का कारण होती है। सूखा, बाढ़ या अन्य दैवी प्रकोपों से कृषि-उत्पादन में कमी हो सकती है। कच्चे माल की कमी, हड़ताल, तालेबन्दी, आदि से औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आ सकती है। ऐसी परिस्थिति में यदि मुद्रा की मात्रा समान रहे तो मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है। इसी प्रकार यदि मजदूर या वेतनभोगी लोग जोर डालकर आय में वृद्धि करा ले, लेकिन उत्पादन की मात्रा ज्यों की त्यों रहे तब भी मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है।

(5) अन्य सरकारी नीतियाँ (Other Government's Policies):- कुछ अन्य सरकारी नीतियाँ भी मुद्रा-स्फीति का कारण बनती हैं। उदाहरण के लिए, यदि सरकार की व्यापार नीति (Trade Policy) ऐसी हो जिससे आयात में कमी एवं निर्यात में वृद्धि हो तो कभी कभी इसके चलते देश में वस्तुओं की मात्रा में कमी हो जाती है और मूल्य बढ़ते हैं। इसी प्रकार सरकार की औद्योगिक नीति (Industrial Policy) नये उद्योगों की स्थापना में अड़चन पैदा करती है तो उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती और मूल्य बढ़ते हैं।

(6) मानव निर्मित कारण (Man-made Causes):- कभी कभी बेईमान और मुनाफाखोर व्यापारी देश में वस्तुओं की पर्याप्त मात्रा रहने पर भी उन्हें गोदामों में छुपाकर रख लेते हैं और वस्तुओं की कृत्रिम कमी (Artificial Scarcity) पैदा कर देते हैं। इसी कृत्रिम कमी के कारण वस्तुओं के मूल्य काफी बढ़ते हैं और बढ़े हुए मूल्यों पर व्यापारी लोग काफी मुनाफा अर्जित करते हैं। इसप्रकार मानव-निर्मित कारणों से भी मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है।

Scanned with CamScanner